श्रील परमगुरुदेव समाधी

श्रीलगुरुदेव

श्रील जगन्नाथ दास बाबा जी महाराज ने अपनी जीवन लीला में ना केवल विविक्तानन्दी भक्त (एकान्तिक भजन) का उदाहरण प्रस्तुत किया अपितु उन्होंने अपने भजन के माध्यम से आचार्य लीला की भूमिका भी निभाई। श्री रासबिहारी गोस्वामी उनके दीक्षित शिष्य थे। श्रील जगन्नाथ दास बाबाजी महाराज का आविर्भाव लगभग 214 वर्ष पूर्व हुआ था। वे

सदा भजन करते समय प्रेम आनन्द में निमग्न रहते थे।

श्री रसिकानन्द देव गोस्वामी का आविर्भाव मिदनापुर जिले के रोहिणी या रोयती नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम राजा अच्युतानन्द तथा माता का नाम श्रीमती भवानी देवी था। इन्होंने अपनी असाधारण अलौकिक शक्ति के द्वारा अनेक प्रतिभाशाली लोगों को आकर्षित किया। उन्होंने अपनी अन्तर्ध्यान लीला भगवान श्री गोपीनाथ जी के श्री अंगों में प्रविष्ट होकर सम्पूर्ण की।

आज ही के दिन श्री चैतन्य गोड़ीय मठ के प्रतिष्ठाता ऊं विष्णुपाद 108 श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी महाराज का 32 वां तिरोभाव तिथि महोत्सव है।

27 फरवरी 1979, दिन मंगलवार (गोविन्दा 26,492, चैतन्याब्द; फाल्गुन 14,1386, बंगाली वर्ष) के अनुसार सुबह 9 बजे भगवान के नाम संकीर्तन की ध्वनियों के बीच पूर्वाह्न में अपने गुरु भ्राताओं तथा शिष्यों को शोक रूपी सागर में छोड़कर श्रीला गुरुदेव (श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी) ने श्री राधा गोविन्द की नित्य लीला

में प्रवेश किया। उसी दिन दोपहर 4 बजे भक्तों द्वारा नाम संकीर्तन की ध्वनियों के साथ श्रीला गुरुदेव के श्री विग्रह को कोलकाता से मायापुर धाम में लाया गया जहां उन्हें शास्त्रीय विधि अनुसार समाधि दी गयी। श्रील गुरुदेव की समाधि संस्कार का सम्पूर्ण कार्यभार मुख्य रूप से श्री श्रीमद् भक्ति प्रसाद पुरी गोस्वामी महाराज की अध्यक्षता में किया गया। 1 मार्च 1979 को श्री चैतन्य गोड़ीय मठ के मुख्यालय, इशोद्यान मायापुर में श्री गुरुदेव का विरह उत्सव आयोजित किया गया।

मैंने श्रील गुरुदेव (श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी) के चरणो में अनेक अपराध किये हैं। जब श्रील गुरुदेव अस्वस्थ लीला करते समय बाहरी रूप से अचेतन अवस्था में थे तब उनका उपचार कर रहे डॉक्टर ने कहा था की वह निश्चित रूप से 3 से 4 दिन तक रहेंगे। कोई अन्य उपाय ना देख मैं बिना किसी को बतलाए ट्रेन द्वारा गोवर्धन चला गया। अगले दिन सुबह मैं गोवर्धन (वृन्दावन) पहुंच गया। मैंने इस आशा से कि गुरु महाराज जल्द ही स्वस्थ हो जाएं, स्नान इत्यादि के पश्चात पूजा वन्दना की। किन्तु कुछ समय पश्चात मुझे सन्देश प्राप्त हुआ कि

श्रील गुरुदेव ने उसी दिन देह त्याग दिया था जिस दिन मैं कोलकाता से चला था। मेरे द्वारा किये गये सभी प्रयास निरर्थक हो गये। यद्यपि मैंने निश्चय किया कि मैं वापस नहीं जाऊंगा तथापि देश के भिन्न-भिन्न दिशाओं से आए भक्तों ने मुझे चैतन्य महाप्रभु के आविर्भाव उत्सव के अन्तिम दिन मायापुर जाने के लिए बाध्य कर दिया।

परम पूज्यपाद श्री श्रीमद् भक्ति प्रसाद पुरी गोस्वामी महाराज ने श्रील गुरुदेव (श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी) द्वारा श्री चैतन्य गोड़ीय मठ में उनकी तिरोभाव लीला

संपन्नता तथा उनके शिष्यों की मर्मान्तिक हृदय स्थिति का निम्नानुसार वर्णन किया है:-

श्रील महाराज (श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी) ने अपने आदर्श चरित्र तथा वीर्यवत हरि कथा के द्वारा पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण असंख्य नर, नारियों को श्रीमन महाप्रभु की शिक्षाओं एवं उनके द्वारा प्रदान किए गए प्रेम धन की ओर आकर्षित किया तथा उन सभी को गोड़ीय वैष्णव धर्म में दीक्षित करवाया। उन्होंने अपने एक अल्प आयु जीवन में अनेक मठ शाखाओं तथा प्रचार केन्द्रों जैसे कि

उत्तर भारत में वृन्दावन, पूर्व में गुवाहाटी, पश्चिम में चण्डीगढ़ तथा दक्षिण में हैदराबाद इत्यादि शहरों में प्रचार केन्द्रों की स्थापना की। इसके साथ ही उन्होंने संस्कृत विद्यालय, पुस्तकालय, प्राथमिक तथा उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थापना की। उन्होंने अदम्य उत्साह पूर्वक जाति, धर्म में भेदभाव किये बिना सभी जीवों के मंगल के लिए महाप्रभु की प्रेम धर्म वाणी का प्रचार किया तथा आचार (आचरण) भी किया। उनके इसी उत्साहयुक्त विशुद्ध प्रचार के कारण अलग-अलग धर्मों के असंख्य नर-नारीयों ने चैतन्य महाप्रभु के प्रेम धर्म का अवलम्बन किया। उनकी

यह सभी क्रियाएं असाधारण तथा इस संसार के बद्ध जीवों की सोच से परे की वस्तु हैं। उनके द्वारा सारस्वत गोड़ीय वैष्णवों को दिये गए अनेक योगदानों में से सबसे महत्वपूर्ण योगदान था उनके द्वारा 12 वर्ष अथक तथा दृढ़ प्रयासों के द्वारा जगन्नाथपुरी धाम में श्री चैतन्य मठ तथा श्री गोड़ीय मठों के संस्थापक नित्यलीला प्रविष्ट ऊं विष्णुपाद 108 श्री श्रीमद् भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर की आविर्भाव स्थली का पुनरोद्धार करना। प्रभुपाद की आविर्भाव स्थली पर एक विशाल अन्तरराष्ट्रीय धार्मिक संस्थान निर्माण का प्रस्ताव

भी रखा गया। श्रील महाराज (श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी महाराज) ने पश्चिम बंगाल के रजिस्ट्री एक्ट के अनुसार श्री चैतन्य गोड़ीय मठ संस्थान की स्थापना की।

27 फरवरी 1979 को संध्या समय 4 बजे श्रील महाराज (श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी) की दिव्य देह को उनकी भजन कुटीर से चारपाई सहित नाट्य मन्दिर के अन्दर लाकर उनके सबसे प्रियतम विग्रह श्री राधा नैनानाथ जी के समक्ष रखा गया। असंख्य नर-नारी उनके विरह दुःख में क्रन्दन करते

हुए उनकी महिमा गुणगान कर रहे थे, इसके साथ ही वे श्रील महाराज को पुष्पांजलि तथा माला अर्पण कर रहे थे। यह सम्पूर्ण दृश्य अत्यन्त हृदयस्पर्शी था। श्री श्रीमद् भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज, श्रीमद् भक्ति सुहृद बोधायन महाराज, श्रीपाद कृष्ण केशव ब्रह्मचारी, श्रीपाद जगमोहनदास ब्रह्मचारी, श्रीपाद कृष्ण दास बाबाजी महाराज, उनके अन्य प्रियतम सहयोगी, उनके सन्यासी, ब्रह्मचारी, गृहस्थी तथा वानप्रस्थी आदि शिष्यों अश्रु युक्त आंखों से उनकी दिव्य देह पर फूल तथा माला अर्पण की। भगवान को अर्पण की गई माला प्रसादी रूप में

महाराज (श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी) के कण्ठ में डाली गई। भगवान का महाप्रसाद तथा उनके चरणों की तुलसी भी महाराज (श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी) के श्री मुख में दी गई।

एक बड़ी लोरी (गाड़ी) को फूल, पंखुड़ियों तथा पत्तों से सुसज्जित किया गया। श्रील महाराज (श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी) को भी फूलों तथा मालाओं से श्रृंगारित कर उस लोरी (गाड़ी) में उनकी चारपाई सहित लाया गया। संकीर्तन दल को मृदंग, करताल तथा अन्य गोड़ीय वाद्ययंत्रों

के साथ श्रील महाराज की चारपाई के निकट बिठाया गया, जहां वे उच्च स्वर से भगवान का नाम संकीर्तन कर रहे थे। श्रील कृष्ण दास बाबाजी महाराज संकीर्तन दल का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। श्रील महाराज की लोरी (गाड़ी) तथा भक्तों से भरी एक बस दोनों रात 11:00 बजे इशोद्यान स्थित श्री चैतन्य गोड़ीय मठ पहुंचे। विरह में क्रन्दन कर रहे सभी शिष्यों ने मिलकर श्रील महाराज की चारपाई को लोरी (गाड़ी) से नीचे उतारा। उसके पश्चात उनकी दिव्य देह को चारपाई सहित नाट्य मन्दिर (संकीर्तन खण्ड) में लाया गया। वहां उपस्थित सभी भक्त

संकीर्तन करते हुए क्रन्दन कर रहे थे तथा श्रील महाराज के श्री चरणों में प्रणाम भी कर रहे थे।

श्रीमद् भक्ति विज्ञान भारतीय महाराज, श्रीमद् भक्ति भूषण भागवत महाराज, श्रीमद् भक्ति ललित गिरी महाराज, श्रीपाद जगमोहनदास ब्रह्मचारी, श्रीपाद कृष्ण केशव ब्रह्मचारी तथा अन्य विशिष्ट वैष्णवों के साथ विचार विमर्श करने के पश्चात श्रील भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज ने श्रील गुरुदेव को मुख्य मन्दिर के उत्तर दिशा की ओर स्थित बकुल पेड़ के पास समाधि देने का निर्णय किया। श्री

भागवत दास ब्रह्मचारी तथा अन्य शिष्यों ने मिलकर समाधि के लिए एक बड़ा सा गड्ढा खोदा जो चार हाथ लम्बा चार हाथ चोड़ा साढ़े 7 फीट गहरा था। उसी गड्ढे में मुख को पूर्व दिशा की ओर रखकर श्रील महाराज (श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी) के लिए आसन लगाया गया।

गड्ढे की खुदाई का कार्य सुबह के 2:00 बजे तक समाप्त हुआ। श्रील महाराज (श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी) की दिव्य देह पर घी तथा अन्य गो-पदार्थों जैसे कि गोमूत्र, गोबर इत्यादि का लेपन किया

गया। श्रील भक्ति प्रसाद पुरी गोस्वामी महाराज ने मन्त्रों का उच्चारण किया। उसी समय श्रील महाराज (श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी) की दिव्य देह को गंगाजल द्वारा स्नान करवाया गया। तत्पश्चात उनके श्री अंगों को द्वादश तिलक द्वारा श्रृंगारित कर उन्हें नए वस्त्र धारण करवाये गये। श्रील भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी महाराज ने राधा कुण्ड की दिव्य मिट्टी द्वारा श्रील महाराज के वक्ष स्थल पर समाधि मन्त्र लिखा। उच्च स्वर से हो रहे संकीर्तन के मध्य में ही श्रील महाराज की दिव्य देह को नाट्य मन्दिर (संकीर्तन खण्ड) से समाधि

स्थली पर लाया गया जहां उनके श्रीमुख को पूर्व दिशा की ओर रखकर उन्हें समाधि मुद्रा में विराजित किया गया। उसके पश्चात श्रीमद् भक्ति ललित गिरी महाराज ने श्रील गुरुदेव (श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी) के चरण कमलों की वन्दना की। उनकी आरती की गई तथा मिठाई, फूल इत्यादि अर्पण किये गए। तत्पश्चात सभी भक्तों ने श्रील महाराज के चरण कमलों में फूल तथा माला के रूप में पुष्पांजलि अर्पण की। उनकी योग (समाधि) मुद्रा में ही समाधि को लवण (नमक) तथा मिट्टी से ढक दिया गया। श्रील महाराज के श्रीमुख को केन्द्र मानकर

उसे चिन्हित कर दिया गया तथा उस चिन्हित स्थान पर वृन्दा देवी का एक गमला रख दिया गया। उसके पश्चात समाधि को चारों ओर से फूलों तथा मालाओं से सुसज्जित कर दिया गया। भक्तों ने भव्य संकीर्तन करते हुए समाधि की परिक्रमा की। यह समाधि अनुष्ठान सुबह 3:00 बजे आरम्भ हुआ तथा संध्या के 5:00 बजे समाप्त हुआ।

श्रीलगुरुदेव